International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com● Email: editor@ijfmr.com

हिंदी - जापानी की वर्ण / ध्वनि व्यवस्था का व्यतिरेकी अध्ययन

(Contrastive Study of Alphabet / Sound System of Hindi - Japanese)

सन्मति जैन

सहायक प्रोफेसर (जापानी भाषा), भाषा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

सारांश

हिंदी एवं जापानी भाषा क्रमश: भारत एवं जापान में बोली जाने वाली भाषाएँ हैं। हालाँकि, भारत एवं जापान के अलावा भी अन्य कई देशों में इन भाषाओं को बोलने वाले लोग हैं। हम जानते हैं कि प्रत्येक भाषा में लिपि अथवा वर्ण/ध्वनि का ज्ञान एक बुनियादी आवश्यकता माना जाता है; क्योंकि बिना इसके ज्ञान के अमुक भाषा में विद्यमान ज्ञान सामग्री को न तो पढ़ा जा सकता है और न ही पुन: लिखा जाना आसान होता है। ज्ञात हो कि हिंदी भाषा की लिपि देवनागरी है, जो कि ध्वन्यात्मक लिपि की श्रेणी में आती है; तथा आधुनिक जापानी भाषा लेखन में तीन लिपियों (हीरागाना लिपि, काताकाना लिपि एवं कांजी लिपि) का एक-साथ एक ही वाक्य में प्रयोग संभावित है; जिनमें से आरंभ की दो लिपियाँ (हीरागाना लिपि एवं काताकाना लिपि) ध्वन्यात्मक लिपियाँ हैं, तथा कांजी लिपि चित्रात्मक/ भावात्मक लिपि की श्रेणी में आती है। ज्ञात हो कि दोनों ही भाषाओं में बहुत सी ध्वनियाँ समान हैं; तथा, बहुत सी ध्वनियाँ ऐसी भी हैं जो कि हिंदी भाषा में विद्यमान हैं एवं प्रयोग भी की जाती हैं; परंतु, जापानी में उनका प्रयोग नहीं होता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में हिंदी भाषा एवं जापानी भाषा की लिपि अथवा वर्ण/ध्वनि के व्यतिरेकी अध्ययन को शोध-कार्य के रूप में प्रस्तुत किया है।

बीज-शब्द

हिंदी भाषा की लिपि व्यवस्था, हिंदी भाषा की वर्ण/ध्वनि व्यवस्था, जापानी भाषा की लिपि व्यवस्था, जापानी भाषा की वर्ण/ध्वनि व्यवस्था, हिंदी-जापानी की लिपि व्यवस्था, हिंदी-जापानी की वर्ण/ध्वनि व्यवस्था।

प्रस्तावना

हिंदी भाषा एवं जापानी भाषा क्रमश: भारत एवं जापान में बोली जाने वाली विश्व की प्रमुख भाषाओं में से एक हैं। हालाँकि, भारत एवं जापान के अलावा भी अन्य कई देशों में इन भाषाओं को बोलने वाले लोग हैं। पूर्वविदित है कि भौगोलिक दृष्टि से दोनों ही भाषाएँ अत्यंत दूरवर्ती देशों की भाषाएँ हैं। भाषा-परिवार की दृष्टि से भी देखा जाये तो हिंदी भाषा आर्य भाषा

परिवार की भाषा मानी जाती है, तथा जापानी भाषा को जेपोनिक भाषा परिवार से संबद्ध भाषा माना जाता है। हम जानते हैं कि प्रत्येक भाषा में लिपि अथवा वर्ण/ध्वनि व्यवस्था का ज्ञान एक बुनियादी आवश्यकता माना जाता है; क्योंकि बिना इसके ज्ञान के अमुक भाषा में विद्यमान ज्ञान सामग्री को न तो पढ़ा जा सकता है और न ही पुन: लिखा जाना आसान होता है। अत: इस दृष्टि से हिंदी एवं जापानी दोनों ही भाषाओं की लिपि अथवा वर्ण/ध्वनि का उचित ज्ञान होना एक अनिवार्य आवश्यकता जान पड़ता है। दृष्ट्या प्रस्तुत शोध-पत्र के माध्यम से शोधकर्ता ने हिंदी भाषा एवं जापानी भाषा में विद्यमान विभिन्न लिपियों एवं वर्णों/ध्वनियों के व्यतिरेकी अध्ययन को शोध-कार्य के रूप में प्रस्तुत किया है। जिसके अंतर्गत हिंदी-जापानी में लिपि व्यवस्था, हिंदी-जापानी में वर्ण/ध्वनि व्यवस्था आदि को प्रस्तुत किया गया है।

हिंदी-जापानी की लिपि व्यवस्था

पूर्व विदित है कि किसी भी भाषा में विद्यमान ज्ञान सामग्री के उचित बोध के लिए उस भाषा की लिपि का ज्ञान होना आवश्यक है। और जब बात जापानी भाषा की आती है तो यह बात अपेक्षाकृत और भी आवश्यक जान पड़ती है; क्योंकि जापानी भाषा में भाषा अर्जन के दौरान जापानी की विभिन्न लिपियों का सही ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है। हालाँकि, हिंदी भाषा में भी भाषा अर्जन के दौरान देवनागरी लिपि का सही ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है; तथापि, जापानी में यह आवश्यकता बहुत अधिक जान पड़ती है; क्योंकि जापानी में चित्रात्मक/ भावात्मक लिपि भी होती है। हम जानते हैं कि दोनों ही भाषाओं की लिपियों में जमीन-आसमान का अंतर है। जिसमें से हिंदी भाषा की लिपि देवनागरी है, जो कि ध्वन्यात्मक लिपि की श्रेणी में आती है; तथा आधुनिक जापानी भाषा लेखन में तीन लिपियों (हीरागाना लिपि, काताकाना लिपि एवं कांजी लिपि) का एक-साथ एक ही वाक्य में प्रयोग संभावित है; जिनमें से आरंभ की दो लिपियाँ (हीरागाना लिपि एवं काताकाना लिपि) ध्वन्यात्मक लिपियाँ हैं, तथा कांजी लिपि चित्रात्मक/भावात्मक लिपि की श्रेणी में आती है।

हिंदी-जापानी की वर्ण/ध्वनि व्यवस्था

ध्वनि अथवा उच्चारण की दृष्टि से हिंदी भाषा-भाषी लोगों के लिए जापानी भाषा का उच्चारण अत्यंत सहज एवं सुगम है; जबकि, जापानी भाषा-भाषी लोगों के लिए हिंदी का उच्चारण अपेक्षाकृत उतना सहज एवं सुगम नहीं है, जितना कि हिंदी भाषा-भाषी लोगों के लिए जापानी का है। इसका एक प्रमुख कारण जापानी भाषा में ऐसे बहुत से वर्णों अथवा ध्वनियों का अभाव माना जा सकता है, जो कि हिंदी भाषा में तो विद्यमान हैं तथा प्रयोग भी किये जाते हैं; परंतु, जापानी भाषा में उनका प्रयोग नहीं होता है। ज्ञात हो कि हिंदी भाषामें वर्ण एवं मात्राएँ अलग-अलग होती हैं, उन्हें आपस में जोड़कर विभिन्न अक्षरों,

पदों आदि का निर्माण किया जाता है; जबकि, जापानी भाषामें वर्णों के साथ ही मात्राएँ जुड़ी हुई होती हैं, मात्राओं को अलग से जोड़ने की आवश्यकता नहीं होती है।

हिंदी भाषा के विभिन्न वर्ण अथवा ध्वनियाँ

हिंदी भाषा में प्रयुक्त वर्णमाला के समग्र वर्णों को उच्चारण की दृष्टि से दो प्रकार (स्वर एवं व्यंजन) से विभक्त कर देखा जा सकता है। ज्ञात हो कि संस्कृत के लिए प्रयुक्त देवनागरी वर्णमाला में स्वरों की संख्या 14 है; परंतु, हिंदी भाषा में ऋ, ऌ एवं ॡ का प्रयोग नहीं होता है। अत: मानक हिंदी में स्वरों की संख्या 11 मानी जाती है। ध्यान रहे कि उच्चारण की दृष्टि से भाषा की लघुतम इकाई 'ध्वनि' है; तथा लेखन की दृष्टि से भाषा की सबसे छोटी इकाई 'वर्ण' है। ज्ञात हो कि मानक हिंदी वर्णमाला में उच्चारण के आधार पर 45 वर्ण (10 स्वर एवं 35 व्यंजन) तथा लेखन के आधार पर 52 वर्ण सम्मिलित किए गए हैं। जिन्हें निम्नानुसार तालिका के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है-

हिंदी में वर्ण/ध्वनि एवं उनकी संख्या

हिंदी में वर्ण/ध्वनि का प्रकार	संख्या	लेखन के आधार पर 52 वर्ण/ध्वनियाँ	संख्या	उच्चारण के आधार पर 45 वर्ण/ध्वनियाँ
स्वर ध्वनियाँ	11	अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ	10	अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ
व्यंजन ध्वनियाँ	33	क, ख, ग, घ, ङ च, छ, ज, झ, ञ ट, ठ, ड, ढ, ण त, थ, द, ध, न प, फ, ब, भ, म य, र, ल, व श, ष, स, ह	33	क, ख, ग, घ, ङ च, छ, ज, झ, ञ ट, ठ, ड, ढ, ण त, थ, द, ध, न प, फ, ब, भ, म य, र, ल, व श, ष, स, ह
संयुक्त व्यंजन	4	क्ष, त्र, ज्ञ, श्र		

ध्वनियाँ				
अनुस्वार या चंद्रबिंदुध्वनि	1	अं/अँ		
विसर्ग ध्वनि	1	अ:		
द्विगुण व्यंजन ध्वनियाँ	2	ड़, ढ़	2	ड़, ढ़
नोट: *ध्यान रहे कि देवनागरी लिपि में उपर्युक्त ध्वनियों के अतिरिक्त कुछ आगत अथवा गृहीत व्यंजन ध्वनियाँ (ख़, ज़, फ़) भी उपयोग में आती हैं; जिनके नीचे नुक़्ता लगाया जाता है।*				

जापानी भाषा के विभिन्न वर्ण अथवा ध्वनियाँ

उपरोक्त हिंदी भाषा की वर्णमाला के समानांतर जापानी वर्णमाला को 'गोजू३ओन्' (पचास ध्वनियाँ) के नाम से जाना जाता है। 'गोजू३ओन्' का हिंदी में शाब्दिक अर्थ 'पचास ध्वनियाँ' किया जा सकता है; जो कि जापानी भाषा में प्रयोग होने वाले सभी स्वर एवं व्यंजन ध्वनियों को मिलाकर पचास की संख्या को इंगित करता है। यद्यपि वर्तमान में प्रयोग की दृष्टि से जापानी वर्णमाला की 'गोजू३ओन्' (पचास ध्वनियाँ) सिमटकर 46 ध्वनियों में सीमित रह गई हैं; तथापि, उन्हें आज भी 'गोजू३ओन्' (पचास ध्वनियाँ) के नाम से ही जाना जाता है। जापानी वर्णमाला की 'गोजू३ओन्' (पचास ध्वनियाँ) निम्नानुसार हैं-

जापानी में ध्वनियाँ	**संख्या**	**जापानी लिपि का देवनागरी में उच्चारण**
स्वर ध्वनियाँ	5	अ, इ, उ, ए, ओ
मूल व्यंजन ध्वनियों (क, स, त, न, ह, म, य, र, व) से निर्मित व्यंजन ध्वनियाँ	39	क, कि, कु, के, को स, शि, सु, से, सो त, चि, त्सु, ते, तो न, नि, नु, ने, नो ह, हि, फ़ु, हे, हो

		म, मि, मु, मे, मो य, यु, यो र, रि, रु, रे, रो व
अनुस्वार ध्वनि	1	न्/म्
मात्र कारक चिह्न के रूप में ही प्रयुक्त होने वाली ध्वनि	1	ओ*
नोटः **इस ध्वनि का लेखन एवं प्रयोग उपर्युक्त 5 स्वर ध्वनियों में सम्मिलित 'ओ' ध्वनि से भिन्न है।*		

वर्तमान जापानी भाषा की वर्णमाला में उपर्युक्तानुसार कुल मिलाकर (5+39+1+1=46) ध्वनि/वर्ण प्रयोग में आते हैं। इनके अलावा सघोष, अघोष एवं संयुक्ताक्षर आदि विकारी ध्वनियों को मिलाने पर यह संख्या लगभग 104 के आसपास तक पहुँच जाती है। यहाँ पर जापानी भाषा लेखन में प्रयुक्त होने वाली ध्वन्यात्मक लिपियों (हीरागाना लिपि एवं काताकाना लिपि) को देवनागरी उच्चारण के साथ निम्नानुसार प्रस्तुत किया गया है-

क) जापानी हीरागाना लिपि की वर्णमाला एवं देवनागरी में उच्चारण:

जैसा कि पहले भी उल्लिखित किया जा चुका है कि हीरागाना लिपि ध्वन्यात्मक लिपि के अंतर्गत आती है, इस लिपि के माध्यम से जापानी भाषा में प्रयुक्त लगभग सभी ध्वनियों का उच्चारण किया जा सकता है; तथा जापानी भाषा के किसी भी शब्द/पद अथवा वाक्य आदि को लिखा/पढ़ा जा सकता है। ज्ञात हो कि जापानी भाषा में प्रयुक्त विभिन्न पार्टिकल्स (कारक-चिह्नों) अथवा शब्द-योजकों आदि को भी इसी लिपि में लिखा जाता है। तथा, जापानी कांजी लिपि के साथ लगने वाले 'ओकुरिगाना' (क्रिया आदि के रूप में प्रयुक्त कांजी अक्षर के साथ लगने वाला हीरागाना) को भी इसी लिपि में लिखा जाता है। ध्यान रहे कि कभी-कभी मुश्किल अथवा कम प्रचलित कांजी (चित्रात्मक/भावात्मक लिपि) शब्दों का उच्चारण भी इसी लिपि में लिखकर पाठ को सुगम अथवा सहज बनाया जाता है। हीरागाना लिपि की 'गोजू३ओन्' (पचास ध्वनियाँ) एवं अन्य विकारी ध्वनियाँ देवनागरी उच्चारण के साथ निम्नानुसार प्रस्तुत हैं-

जापानी हीरागाना लिपि की 'गोजू३ओन्' (पचास ध्वनियाँ) एवं देवनागरी में उच्चारण				
あ(आ)	い(इ)	う(उ)	え(ए)	お(ओ)
か(का)	き(कि)	く(कु)	け(के)	こ(को)
さ(सा)	し(शि)	す(सु)	せ(से)	そ(सो)
た(ता)	ち(चि)	つ(त्सु)	て(ते)	と(तो)
な(ना)	に(नि)	ぬ(नु)	ね(ने)	の(नो)
は(हा)	ひ(हि)	ふ(फ़ु)	へ(हे)	ほ(हो)
ま(मा)	み(मि)	む(मु)	め(मे)	も(मो)
や(या)		ゆ(यु)		よ(यो)
ら(रा)	り(रि)	る(रु)	れ(रे)	ろ(रो)
わ(वा)				を(ओ)
				ん(न्/म्)
दाकुतेन्/ हान्दाकुतेन् ध्वनियाँ (विकारी ध्वनियाँ)				
が(गा)	ぎ(गि)	ぐ(गु)	げ(गे)	ご(गो)
ざ(ज़ा)	じ(जि)	ず(ज़ु)	ぜ(ज़े)	ぞ(ज़ो)
だ(दा)	ぢ(जि)	づ(ज़ु)	で(दे)	ど(दो)
ば(बा)	び(बि)	ぶ(बु)	べ(बे)	ぼ(बो)
ぱ(पा)	ぴ(पि)	ぷ(पु)	ぺ(पे)	ぽ(पो)

योउओन् ध्वनियाँ (संयुक्त ध्वनियाँ)		
きゃ(क्या)	きゅ(क्यु)	きょ(क्यो)
しゃ(शा)	しゅ(शु)	しょ(शो)
ちゃ(चा)	ちゅ(चु)	ちょ(चो)
にゃ(न्या)	にゅ(न्यु)	にょ(न्यो)
ひゃ(ह्या)	ひゅ(ह्यु)	ひょ(ह्यो)
みゃ(म्या)	みゅ(म्यु)	みょ(म्यो)

りゃ(र्या)	りゅ(र्यु)	りょ(र्यो)
दाकुतेन्/ हान्दाकुतेन् सहित योउओन् ध्वनियाँ (संयुक्त एवं विकारी ध्वनियाँ)		
ぎゃ(ग्या)	ぎゅ(ग्यु)	ぎょ(ग्यो)
じゃ(जा)	じゅ(जु)	じょ(जो)
びゃ(ब्या)	びゅ(ब्यु)	びょ(ब्यो)
ぴゃ(प्या)	ぴゅ(प्यु)	ぴょ(प्यो)

ख) जापानी काताकाना लिपि की वर्णमाला एवं देवनागरी में उच्चारण:

जैसा कि पूर्वविदित है कि हीरागाना लिपि की भाँति काताकाना लिपि भी ध्वन्यात्मक लिपि है, अत: हीरागाना लिपि की भाँति इस लिपि के माध्यम से भी जापानी भाषा की लगभग सभी ध्वनियों का उच्चारण किया जा सकता है; तथा जापानी भाषा के किसी भी शब्द/पद अथवा वाक्य आदि को लिखा/पढ़ा जा सकता है।इस लिपि का प्रयोग मुख्यरूप से विदेशी भाषाओं से आगत शब्दों को लिखने के लिए किया जाता है; अर्थात् ऐसे शब्द जो मूलत: जापानी भाषा के नहीं हैं, उन्हें काताकाना लिपि में लिखा जाता है। ध्यान रहे कि इस लिपि का प्रयोग मात्र विदेशी भाषाओं से आगत शब्दों को लिखने के लिए ही नहीं किया जाता है; विदेशी भाषाओं से आगत शब्दों के अलावा जापानी में प्रयुक्त किसी वाक्य के किसी शब्द पर ज़ोर देने, ध्वनि अनुकरणात्मक शब्दों को लिखने, जानवरों आदि द्वारा उच्चरित ध्वनियों को इंगित करने आदि में भी इस लिपि का प्रयोग किया जाता है। काताकाना लिपि की 'गोजूउओन्' (पचास ध्वनियाँ) एवं अन्य विकारी ध्वनियाँ देवनागरी उच्चारण के साथ निम्नानुसार प्रस्तुत हैं-

जापानी काताकाना लिपि की 'गोजूउओन्' (पचास ध्वनियाँ) एवं देवनागरी में उच्चारण				
ア(आ)	イ(इ)	ウ(उ)	エ(ए)	オ(ओ)
カ(का)	キ(कि)	ク(कु)	ケ(के)	コ(को)
サ(सा)	シ(शि)	ス(सु)	セ(से)	ソ(सो)
タ(ता)	チ(चि)	ツ(त्सु)	テ(ते)	ト(तो)
ナ(ना)	ニ(नि)	ヌ(नु)	ネ(ने)	ノ(नो)
ハ(हा)	ヒ(हि)	フ(फ़ु)	ヘ(हे)	ホ(हो)

International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com● Email: editor@ijfmr.com

マ(मा)	ミ(मि)	ム(मु)	メ(मे)	モ(मो)
ヤ(या)		ユ(यु)		ヨ(यो)
ラ(रा)	リ(रि)	ル(रु)	レ(रे)	ロ(रो)
ワ(वा)				ヲ(ओ)
				ン(न्)
दाकुतेन्/ हान्दाकुतेन् ध्वनियाँ (विकारी ध्वनियाँ)				
ガ(गा)	ギ(गि)	グ(गु)	ゲ(गे)	ゴ(गो)
ザ(ज़ा)	ジ(जि)	ズ(ज़ु)	ゼ(ज़े)	ゾ(ज़ो)
ダ(दा)	ヂ(जि)	ヅ(ज़ु)	デ(दे)	ド(दो)
バ(बा)	ビ(बि)	ブ(बु)	ベ(बे)	ボ(बो)
パ(पा)	ピ(पि)	プ(पु)	ペ(पे)	ポ(पो)

यो३ओन् ध्वनियाँ (संयुक्त ध्वनियाँ)		
キャ(क्या)	キュ(क्यु)	キョ(क्यो)
シャ(शा)	シュ(शु)	ショ(शो)
チャ(चा)	チュ(चु)	チョ(चो)
ニャ(न्या)	ニュ(न्यु)	ニョ(न्यो)
ヒャ(ह्या)	ヒュ(ह्यु)	ヒョ(ह्यो)
ミャ(म्या)	ミュ(म्यु)	ミョ(म्यो)
リャ(र्या)	リュ(र्यु)	リョ(र्यो)
दाकुतेन्/ हान्दाकुतेन् सहित यो३ओन् ध्वनियाँ (संयुक्त एवं विकारी ध्वनियाँ)		
ギャ(ग्या)	ギュ(ग्यु)	ギョ(ग्यो)
ジャ(जा)	ジュ(जु)	ジョ(जो)
ビャ(ब्या)	ビュ(ब्यु)	ビョ(ब्यो)
ピャ(प्या)	ピュ(प्यु)	ピョ(प्यो)

हिंदी-जापानी की वर्ण/ध्वनि व्यवस्था के अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष एवं उपसंहार:

उपर्युक्तानुसार हिंदी एवं जापानी दोनों ही भाषाओं की वर्ण/ध्वनि व्यवस्था के अध्ययन से ज्ञात होता है कि दोनों ही भाषाओं की लिपियाँ निश्चित रूप से भिन्न-भिन्न हैं; परंतु, उच्चारण की दृष्टि से दोनों ही भाषाओं में बहुत सी ध्वनियाँ समान हैं; तथा बहुत सी ध्वनियाँ ऐसी भी हैं, जो कि हिंदी भाषा में विद्यमान हैं एवं प्रयोग भी की जाती हैं; परंतु, जापानी में उनका प्रयोग नहीं होता है। हिंदी एवं जापानी दोनों ही भाषाओं की वर्ण/ध्वनि व्यवस्था में विद्यमान व्यतिरेकी अध्ययन को निम्नानुसार प्रस्तुत किया गया है-

1. हिंदी भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है; जबकि, जापानी भाषा लेखन में तीन लिपियों (हीरागाना लिपि, काताकाना लिपि एवं कांजी लिपि) का एक-साथ एक ही वाक्य में प्रयोग संभावित है।

2. हिंदी भाषा में वर्ण एवं मात्राएँ अलग-अलग होती हैं, उन्हें आपस में जोड़कर विभिन्न अक्षरों, पदों आदि का निर्माण किया जाता है; जबकि, जापानी भाषामें वर्णों के साथ ही मात्राएँ जुड़ी हुई होती हैं, मात्राओं को अलग से जोड़ने की आवश्यकता नहीं होती है।

3. जापानी भाषा के लगभग सभी स्वरों एवं व्यंजनों का उच्चारण हिंदी भाषा में लिखा-पढ़ा जा सकता है; जबकि, हिंदी भाषा के सभी वर्णों का उच्चारण जापानी भाषा में नहीं लिखा जा सकता है।

4. हिंदी भाषा में सभी व्यंजन हलंत्य होते हैं; जबकि, जापानी भाषा में एक अनुस्वार वर्ण ん (न्/म्) को छोड़कर शेष सभी व्यंजन स्वर सहित होते हैं।

5. ऊपर तालिका (हीरागाना लिपि तालिका एवं काताकाना लिपि तालिका) में दर्शायी गई जापानी ध्वनियों के उच्चारण के समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हिंदी के सापेक्ष 'अ', 'क', 'स', 'त', 'न', 'ह', 'म', 'य', 'र' एवं 'व' ध्वनियों का उच्चारण न तो 'अ', 'क', 'स', 'त', 'न', 'ह', 'म', 'य', 'र' एवं 'व' के रूप में होता है; और न ही आ, का, सा, ता, ना, हा, मा, या, रा एवं वा के रूप में होता है। बल्कि, इनका उच्चारण इन दोनों के बीच का होता है।

6. मानक हिंदी वर्णमाला में उच्चारण के आधार पर 45 वर्ण (10 स्वर एवं 35 व्यंजन) तथा लेखन के आधार पर 52 वर्ण सम्मिलित किए गए हैं; जबकि, मानक जापानी वर्णमाला में 5 स्वर और 14 (मूल 9) व्यंजन ध्वनियाँ सम्मिलित की गई हैं।

7. हिंदी भाषा में मूर्धन्य (ट, ठ, ड, ढ, ण, ड़, एवं ढ़ आदि) ध्वनियाँ होती हैं; जबकि, जापानी भाषा में मूर्धन्य ध्वनियाँ नहीं होती हैं।

International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

8. हिंदी भाषा में अल्प-प्राण ध्वनियाँ (क, ग, ङ, च, ज, ञ, ट, ड, ण, त, द, न, प, ब, म, य, र, ल, व)होती हैं; जबकि, जापानी भाषा में हिंदी भाषा की अल्प-प्राण ध्वनियों (क, ग, च, ज, त, द, न, प, ब, म, य, र, व) को छोड़कर शेष अल्प-प्राण ध्वनियाँ नहीं होती हैं।

9. हिंदी भाषा में महाप्राण ध्वनियाँ (ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ, श, ष, स, ह) होती हैं; जबकि, जापानी भाषा में हिंदी भाषा की महाप्राण ध्वनियों (श, स एवं ह) को छोड़कर शेष महाप्राण ध्वनियाँ नहीं होती हैं।

10. हिंदी भाषामें अघोष ध्वनियाँ (क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ, श, ष, स) होती हैं; जबकि, जापानी भाषा में हिंदी भाषा की अघोष ध्वनियों (क, च, त, प, श, स) को छोड़कर शेष अघोष ध्वनियाँ नहीं होती हैं।

11. हिंदी भाषा में सघोष ध्वनियाँ (ग, घ, ङ, ज, झ, ञ, ड, ढ, ण, द, ध, न, ब, भ, म, य, र, ल, व, ह) होती हैं; जबकि, जापानी भाषा में हिंदी भाषा की सघोष ध्वनियों (ग, ज, द, न, ब, म, य, र, व, ह) को छोड़कर शेष सघोष ध्वनियाँ नहीं होती हैं।

12. हिंदी भाषा में पाँच अनुस्वार ध्वनियाँ (ङ, ञ, ण, न, म) एवं एक अनुनासिक ध्वनि (ँ) होती है; जबकि, जापानी भाषा में अनुस्वार ध्वनि अथवा अनुनासिक ध्वनि के नाम पर मात्र एक ध्वनि ん (ं) होती है, जिसे प्रयुक्त पूर्वापर वर्ण के अनुसार (न्) अथवा (म्) उच्चरित किया जाता है।

13. हिंदी भाषा में संयुक्त व्यंजन ध्वनियाँ (क्ष, त्र, ज्ञ, श्र) होती हैं; जबकि जापानी भाषा में मूल रूप से मात्र एक ही संयुक्त व्यंजन ध्वनि っ (त्सु) होती है। हालाँकि, अर्द्ध व्यंजन ध्वनियों के संयोग से अन्य संयुक्त व्यंजन ध्वनियों की निर्मिति संभावित है।

14. हिंदी भाषामें विसर्ग ध्वनि (अः) होती है; जबकि, जापानी भाषा में विसर्ग ध्वनि नहीं होती है।

15. हिंदी भाषा में अरबी-फारसी से आगत नुक़्ता युक्त ध्वनियाँ (ख़, ज़, फ़) होती हैं; जबकि, जापानी भाषा में हिंदी भाषा की नुक़्ता युक्त ध्वनि (ज़ एवं फ़) को छोड़कर शेष ध्वनियाँ नहीं होती हैं।

16. जापानी भाषा लेखन एवं वाचन में प्रयुक्त संयुक्त व्यंजन वर्ण つ बड़ा (त्सु) हिंदी भाषा में नहीं होता है। हालाँकि, इसे हिंदी में आसानी से लिखा एवं उच्चरित किया जा सकता है।

17. जापानी भाषा लेखन एवं वाचन में प्रयुक्त संयुक्त व्यंजन っ छोटा (त्सु) हिंदी भाषा में नहीं होता है। ज्ञात हो कि जापानी में इस छोटे (त्सु) का प्रयोग जिस वर्ण के पूर्व किया जाता है; उस वर्ण का उच्चारण डेढ़ गुना हो जाता है, अर्थात् (आधा एवं पूरा) हो जाता है। उदाहरण के लिए かって (Katte) कात्ते, たって (Tatte) तात्ते, すわって (Suwatte) सुवात्ते आदि। हालाँकि, हिंदी भाषा में यह संयुक्त व्यंजन नहीं होता है; तथापि, हिंदी में इसे आसानी से लिखा एवं उच्चरित किया जा सकता है।

18. जापानी भाषा लेखन में प्रयुक्त होने वाला पुनरुक्ति चिह्न ゝ हिंदी भाषा में नहीं होता है। ज्ञात हो कि जापानी में इस पुनरुक्ति चिह्नका प्रयोग जिस वर्ण के पश्चात् किया जाता है; उस वर्ण का उच्चारण दो बार किया जाता है। उदाहरण के लिए こゝろ (Kokoro) कोकोरो, おゝの (Oono) ओओनो, さゝき (Sasaki) सासाकि आदि। हालाँकि, हिंदी भाषा में यह पुनरुक्ति चिह्न नहीं होता है; तथापि, हिंदी में इसे आसानी से लिखा एवं उच्चरित किया जा सकता है।

संदर्भ-ग्रंथ सूची

1. पांडेय, अनिल कुमार. (2010). *हिंदी संरचना के विविध पक्ष*. प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली.
2. जैन, सन्मति. (2018). *जापानी-अंग्रेज़ी-हिंदी शब्दकोश*. अनन्य प्रकाशन, नई दिल्ली.
3. तिवारी, भोलानाथ. (2016). *भाषाविज्ञान प्रवेश एवं हिंदी भाषा*. किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली.
4. कुमार, अरविंद. (2019). *संपूर्ण हिंदी व्याकरण और रचना*. ल्यूसेंट प्रकाशन, पटना, बिहार
5. तरूण, हरिवंश. (2011). *मानक हिंदी व्याकरण और रचना*.प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली
6. Snell, R., & Weightman, S. (2003). *Teach Yourself Hindi (2003 ed.)*, McGraw-Hill.
7. Tsujimura, N. (2013). *An introduction to Japanese linguistics*. Third Edition. John Wiley & Sons.
8. Kindaichi, Haruhiko; Hirano, Umeyo. (1978). *The Japanese Language*. Tuttle Publishing.
9. Pandey, P. (2007). Phonology–orthography interface in Devanāgarī for Hindi. *Written Language & Literacy*, *10*(2), 139-156.
10. Masiko, H. (2019). Script and orthography problems. In *Routledge Handbook of Japanese Sociolinguistics* (pp. 315-325). Routledge.
11. Kay, G. (1995). English loanwords in Japanese. *World Englishes*, *14*(1), 67-76.
12. Ohala, M., & Ohala, M. (1975). Nasals and nasalization in Hindi. *Nasalfest*, 317-32.
13. Agnihotri, R. K. (2022). *Hindi: An essential grammar*. Routledge.
14. Pandey, P. (2014). Akshara-to-sound rules for Hindi. *Writing Systems Research*, *6*(1), 54-72.
15. Hayes-Harb, R., & Barrios, S. (2022). Native English speakers and Hindi consonants: From cross-language perception patterns to pronunciation teaching. *Foreign Language Annals*, *55*(1), 175-197.
16. Mishra, D., & Bali, K. (2011, August). A Comparative Phonological Study of the Dialects of Hindi. In *ICPhS* (Vol. 17, pp. 17-21).
17. NAKAZIMA, S. (1959). A comparative study of the sounds of American English and Japanese. *Psychologia*, *2*(3), 165-172.

18. Nakagawa, S., & Sakai, T. (1977). Some Properties of Japanese Sounds through Perceptual Experiments and Spectral Analysis. *音声科学研究*, *11*, 48-64.
19. Tsurutani, C. (2004). Acquisition of Yo-on (Japanese contracted sounds) in L1 and L2 phonology. *Second Language*, *3*, 27-47.
20. Silva Fonseca, M. A. (2023). *The learning the sounds of Japanese: Experimental and computational approaches* (Doctoral dissertation, University of Illinois at Urbana-Champaign).
21. Dev, A., Agrawal, S. S., & Choudhury, D. R. (2003). Categorization of Hindi phonemes by neural networks. *AI & SOCIETY*, *17*, 375-382.